DAWAT-E-ISLAMI

रिसाला नम्बर : 7

Pur Asraar Khazana (Hindi)

पुर असरार ख़ज़ाना

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

पुर असरार ख़ज़ाना

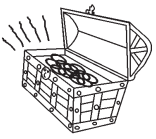

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (23 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में मदनी इन्क़िलाब बरपा होता मह़सूस फ़रमाएंगे ।

सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुरूद ख़्वां का रुख़्सार चूमा

ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मद बिन सईद عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُعِیْد सोने से क़ब्ल एक मुक़र्ररा ता'दाद में दुरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे । आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : एक बार जब दुरूद शरीफ़ पढ़ कर रात को सोया तो मेरी क़िस्मत अंगड़ाई ले कर जाग उठी, मैं जिस मीठे मीठे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदो सलाम पढ़ा करता हूं वोही मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ ले आए और फ़रमाया : ''अपना वोह मुंह जिस से तुम मुझ पर दुरूद पढ़ते हो मेरे क़रीब करो ताकि मैं इसे चूम लूं ।'' येह सुन कर मुझे बड़ी शर्म आई, मैं अपना मुंह सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के दहने अक़्दस (या'नी

مدینہ

1 : اَلْحَمْدُ لِلّٰہ शबे जुमुआ (10-5-1418) को **अमीरे अहले सुन्नत** का येह बयान ब ज़रीअ़ए टेलीफ़ोन रिले हुवा और हज़ारहा इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों ने येह बयान सुनने की सआ़दत ह़ासिल की । तरमीम व इज़ाफ़े के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।
-मजलिसे मक्तबतुल मदीना

मुबारक मुंह) के क़रीब कैसे करूं ! मैं ने अपना रुख़्सार (या'नी गाल) सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सामने कर दिया और रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने निहायत ही शफ़्क़त के साथ इस पर बोसा दिया। जब मैं बेदार हुवा तो सारा घर मुश्कबार हो रहा था। और मेरा रुख़्सार आठ रोज़ तक ख़ूब ख़ूब ख़ुश्बूदार रहा।

(القولُ البديع ص ٢٨١ ملخّصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान सुनने के आदाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! निगाहें नीची किये तवज्जोह के साथ बयान सुनिये कि ला परवाही से इधर उधर या पीछे मुड़ मुड़ कर देखते हुए, ज़मीन पर उंगली से खेलते हुए, अपने कपड़े, बदन या बालों को सहलाते हुए, बातें करते हुए या टेक लगा कर सुनने से नीज़ अधूरा बयान सुन कर चल पड़ने से इस की बरकतें ज़ाइल होने का अन्देशा है। बे तवज्जोही के साथ क़ुरआनो सुन्नत की बात सुनना मुसल्मानों की सिफ़ात से नहीं है। **सूरतुल अम्बियाअ** दूसरी और तीसरी आयाते करीमा में इर्शादे रब्बानी है :

مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۙ﴿۲﴾ لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ؕ

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, वलिय्ये ने'मत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए

रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिद्अ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइसे ख़ैरो बरकत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن अपने शोह्रए आफ़ाक़ तरजमए क़ुरआन **''कन्ज़ुल ईमान''** में इस का तरजमा कुछ यूं करते हैं : ''जब उन के रब के पास से उन्हें कोई नई नसीह़त आती है तो उसे नहीं सुनते मगर खेलते हुए उन के दिल खेल में पड़े हैं।''

यतीमों की दीवार

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام का मश्हूर क़ुरआनी वाक़िआ़ जो पन्दरहवें पारे से शुरूअ़ हो कर सोलहवें पारे में ख़त्म होता है, उस में येह भी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام एक शह्र में तशरीफ़ ले गए । वहां के बाशिन्दों ने इन ह़ज़रात की न मेहमान नवाज़ी की न ही खाना ह़ाज़िर किया । ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने वहां एक बोसीदा दीवार जो गिरने के क़रीब थी उस को दुरुस्त किया । ऐसे लोग जिन्हों ने पानी तक को नहीं पूछा उन के यहां दीवार की ख़िदमत का काम तअ़ज्जुब अंगेज़ था । लिहाज़ा ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने ह़ज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से फ़रमाया : ''आप अगर चाहते तो इन लोगों से कुछ उजरत ही ले

लेते।'' सय्यिदुना ख़िज़्र عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلام ने कहा : ''येह **दो यतीमों की दीवार** है जो एक नेक आदमी की औलाद हैं और इस के नीचे ख़ज़ाना है, अगर दीवार गिर जाती तो ख़ज़ाना ज़ाहिर हो जाता और लोग उठा जाते लिहाज़ा आप के रब عَزَّوَجَلَّ ने चाहा कि वोह बच्चे जवान हो कर ख़ज़ाना निकाल लें। इन के नेक बाप के सदक़े में इन पर भी रह़मत हुई।'' मुफ़स्सिरीने किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام फ़रमाते हैं : ''वोह नेक आदमी उन बच्चों का सातवीं या दसवीं पुश्त पर जा कर वालिद बनता था।''

(مُلَخّص اَز تفسیرِ صاوی ج٤ ص١٢١١، ١٢١٣)

ख़ज़ानए ला जवाब

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यहां पर उन के वालिद की नेकी का लिह़ाज़ फ़रमाया गया ख़ुद उन बच्चों की नेकी का तज़्किरा नहीं। उन के वालिद **नेक** और परहेज़ गार थे लिहाज़ा उन का **ख़ज़ानए ला जवाब** मह़फ़ूज़ रखा गया। सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्सान की नेकूकारी से उस की औलाद और औलाद दर औलाद की इस्लाह़ फ़रमा देता है और उस की नस्ल और उस के पड़ोसियों में उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से पर्दे और अमान में रहते हैं।''

(تفسیر دُرِّ مَنثور ج٥ ص٤٢٢)

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْہَادِی फ़रमाते हैं : सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم फ़रमाते हैं : ''अल्लाह तआ़ला एक सालेह़ (या'नी

नेक) मुसल्मान की बरकत से उस के पड़ोस के सो घर वालों की बला दफ़्अ़ फ़रमाता है।" (معجم اوسط ج۳ ص۱۲۹ حدیث ۴۰۸۰) سُبْحٰنَ اللّٰه नेकों का क़ुर्ब भी फ़ाएदा पहुंचाता है। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान, स. 87)

सात इ़ब्रत नाक इ़बारात

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि नेक लोगों की बरकत से उन की औलाद बल्कि हमसायों (या'नी पड़ोसियों) को भी फ़ाएदा पहुंचता है, तो नेक आदमी कितना भला इन्सान होता है कि इस के फ़ुयूज़ो बरकात से न जाने कितने लोग मुतमत्तेअ़ व मालामाल होते हैं। अभी जिस ख़ज़ानए ला जवाब का ज़िक्र हुवा उस का तज़्किरा **सूरतुल कह्फ़** पारह 16 आयत 82 में कुछ यूं है :

وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : उस के नीचे उन का ख़ज़ाना था और उन का बाप नेक आदमी था।

इस आयते मुक़द्दसा के तह़्त ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : वोह ख़ज़ाना सोने की एक तख़्ती पर मुश्तमिल था और उस पर सात इ़ब्रत आमोज़ इ़बारात मन्क़ूश थीं :

﴾1﴿ उस शख़्स का ह़ाल अ़जीब है जो मौत का यक़ीन होने के बा वुजूद हंसता है।

﴾2﴿ उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जो दुन्या को फ़ना होने वाली तस्लीम करने के बा वुजूद इस में मुत़्मइन व मुन्हमिक (या'नी मश्ग़ूल और खोया हुवा) है।

﴾3﴿ उस शख़्स पर ह़ैरत है जो तक़्दीर पर ईमान रखने के बा वुजूद दुन्या (की ने'मतें) न मिलने पर मग़्मूम होता है।

﴾4﴿ कितना अ़जीब है वोह आदमी जिस को यक़ीन है कि क़ियामत को ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब देना है इस के बा वुजूद दुन्या की दौलत जम्अ़ करने की धुन में मगन है।

﴾5﴿ ह़ैरत है उस शख़्स पर जो जहन्नम को सख़्त तरीन अ़ज़ाब का मक़ाम तस्लीम करने के बा वुजूद गुनाहों से बाज़ नहीं आता।

﴾6﴿ अ़जीब है वोह शख़्स कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को पहचानने के बा वुजूद ग़ैरों के तज़्किरे करता है।

﴾7﴿ तअ़ज्जुब है उस पर जो येह जानता है कि जन्नत में ने'मतें ही ने'मतें हैं फिर भी दुन्या की राह़तों में गुम है। इसी त़रह़ उस का ह़ाल भी अ़जीब है जो शैत़ान को जान व ईमान का दुश्मन जानते हुए भी उस की पैरवी करता है। (اَلْمُنَبِّهات عَلَى الاستعداد ص۸۳ مُلَخَّصاً)

मौत का यक़ीन और हंसना

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! उन दो यतीमों के ख़ज़ानए ला जवाब पर इन सात इ़बारात का **पुर असरार ख़ज़ाना** भी काफ़ी इ़ब्रत नाक है। येह **पुर असरार ख़ज़ाना** हमें इ़ब्रत के मुश्कबार **मदनी फूल** पेश कर रहा है। वाक़ेई मौत का यक़ीन रखने वालों का हंसना तअ़ज्जुब ख़ेज़ है, दुन्या को फ़ानी मानने के बा वुजूद इस में मुत्मइन रहना ह़ैरत अंगेज़ है, तक़्दीर पर यक़ीन रखने के बा वुजूद दुन्या का माल न मिलने पर या नुक़्सान हो जाने पर वावेला करना ह़ैरतनाक है, जितना माल ज़ियादा उतना वबाल ज़ियादा, क़ियामत में ह़िसाब किताब ज़ियादा येह

सब कुछ यक़ीन रखने के बा वुजूद हर वक़्त इस सोच में रहना कि बस किसी त़रह़ दौलत में इज़ाफ़ा हो जाए, यहां कारोबार है तो वहां भी ब्रान्च खुल जाए इस त़रह़ की धुन में मगन रहने वाले पर क्यूं ह़ैरत न हो कि जब उसे येह मा'लूम है कि बरोज़े क़ियामत मुझे ज़र्रे ज़र्रे का ह़िसाब देना पड़ जाएगा, तो आख़िर फिर वोह इतनी दौलत क्यूं जम्अ़ करता चला जा रहा है ? उसे मालो दौलत के ह़रीसों के इ़ब्रत नाक अन्जाम से आख़िर क्यूं दर्स ह़ासिल नहीं होता ? कल क़ियामत की कड़ी धूप में अपने कसीर मालो दौलत का ह़िसाब किस त़रह़ दे सकेगा ?

जहन्नम की होलनाकियां

वोह बन्दा भी कितना अ़जीब है जो येह जानता है कि दोज़ख़ सख़्त तरीन अ़ज़ाब का मक़ाम है फिर भी गुनाहों का इरतिकाब करता है मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! **जहन्नम** को अगर सूई के नाके के बराबर खोल दिया जाए तो तमाम ज़मीन वाले उस की गरमी से हलाक हो जाएं । (مُعجَم اَوسَط ج۲ص۷۸حدیث۲۵۸۳)

अहले जहन्नम को जो मश्रूब पीने के लिये दिया जाएगा वोह इस क़दर ख़त़रनाक है कि अगर उस का एक डोल दुन्या में बहा दिया जाए तो दुन्या की तमाम खेतियां बरबाद हो जाएं न अनाज उगे न फल । **जहन्नम** के सांप और बिच्छू बेह़द ख़ौफ़नाक हैं । ह़दीस शरीफ़ में है : ''जहन्नम में अ़जमी ऊंटों की गरदन की मिस्ल बड़े बड़े **सांप** होंगे जो दोज़ख़ियों को डसते होंगे, वोह ऐसे ज़हरीले होंगे कि अगर एक मर्तबा काट लेंगे तो चालीस साल तक उन के ज़ह्र की तक्लीफ़ नहीं जाएगी और लगाम लगाए हुए **ख़च्चरों** के बराबर बड़े बड़े **बिच्छू** जहन्नमियों को डंक मारते

रहेंगे कि एक बार डंक मारने की तक्लीफ़ चालीस साल तक बाक़ी रहेगी।''

(مسند امام احمد بن حنبل ج٦ص٢١٦حديث ١٧٧٢٩)

तिरमिज़ी की रिवायत में है : ''जहन्नम में ''**सऊ़द**'' नामी आग का एक पहाड़ है जिस पर काफ़िर जहन्नमी को 70 साल तक चढ़ाया जाएगा फिर ऊपर से उसे गिराया जाएगा तो 70 साल में वोह नीचे पहुंचेगा इसी त़रह़ हमेशा अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा।'' **(ترمذی ج٤ص٢٦٠حديث ٢٥٨٥)**

जहन्नम के ऐसे ऐसे **ख़ौफ़नाक अ़ज़ाब** का तज़्किरा सुनने के बा वुजूद भी जो गुनाहों से बाज़ न आए उस पर वाक़ेई तअ़ज्जुब है। आख़िर इन्सान को इस दुन्या ने क्या दे देना है जो इस की रंगीनियों में गुम और इस की लूटमार में मसरूफ़ है।

जहन्नम की ख़त़रनाक ग़िज़ाएं

लज़ीज़ ग़िज़ाएं मज़े ले ले कर खाने वालों को जहन्नम की भयानक ग़िज़ाओं को नहीं भूलना चाहिये! ''**तिरमिज़ी**'' की रिवायत में है : ''दोज़ख़ियों पर भूक मुसल्लत़ की जाएगी तो येह भूक उन सारे अ़ज़ाबों के बराबर हो जाएगी जिन में वोह मुब्तला हैं, वोह फ़रियाद करेंगे तो उन्हें आग के कांटे वाला खाना दिया जाएगा, जो न मोटा करे न भूक से नजात दे, फिर वोह खाना मांगेंगे तो उन्हें गले में अटक्ने वाला खाना दिया जाएगा तो उन्हें याद आएगा कि (दुन्या में) ऐसे खाने के वक़्त वोह पानी पिया करते थे चुनान्चे वोह पानी मांगेंगे तो उन को लोहे की बाल्टियों से **खौलता हुवा पानी** दिया जाएगा जब वोह उन के मुंह के क़रीब होगा तो उन के मुंह भून देगा फिर जब उन के पेट में दाख़िल होगा तो उन के पेटों की हर चीज़ काट डालेगा।''

(ترمذی ج٤ص٢٦٣حديث ٢٥٩٥)

एक और ह़दीसे पाक में है : "**ज़क़्क़ूम** (या'नी थूहड़ जो कि दोज़ख़ियों को खिलाया जाएगा) का एक क़त़रा अगर दुन्या पर टपक पड़े तो दुन्या वालों के खाने पीने की तमाम चीज़ों को (तल्ख़ व बदबूदार बना कर) ख़राब कर दे।" (ابنِ ماجه ج٤ص٥٣١حديث ٤٣٢٥)

आह ! जहन्नम में ऐसा होलनाक अ़ज़ाब होने के बा वुजूद आख़िर इन्सान गुनाहों पर इतना दिलेर क्यूं है ?

झूटे के जबड़े चीरे जा रहे थे

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! ख़ौफ़े ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ से लरज़ उठिये ! और अपने गुनाहों से तौबा कर लीजिये ! **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ख़्वाब में एक शख़्स मेरे पास आया और बोला : चलिये ! मैं उस के साथ चल दिया, मैं ने दो आदमी देखे, उन में एक खड़ा और दूसरा बैठा था, खड़े हुए शख़्स के हाथ में लोहे का ज़म्बूर[1] था जिसे वोह बैठे शख़्स के एक जबड़े में डाल कर उसे गुद्दी तक चीर देता फिर ज़म्बूर निकाल कर दूसरे जबड़े में डाल कर चीरता, इतने में पहले वाला जबड़ा अपनी अस्ली ह़ालत पर लौट आता, मैं ने लाने वाले शख़्स से पूछा : येह क्या है ? उस ने कहा : येह **झूटा** शख़्स है इसे क़ियामत तक क़ब्र में येही अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा। (مَساوِی الْاَخلاق لِلخَرائطی ص ٧٦ حديث ١٣١)

चेहरे और सीने नोच रहे थे

मे'राज की रात सरवरे काएनात, शाहे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ऐसे लोगों के पास से गुज़रे जो तांबे के नाख़ुनों से अपने चेहरे और सीने नोच रहे थे। सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के इस्तिफ़्सार (या'नी

1 : या'नी लोहे की सलाख़ जिस का एक त़रफ़ का सिरा मुड़ा हुवा होता है।

पूछने) पर अ़र्ज़ किया गया : "येह लोग आदमियों का गोश्त खाने वाले (या'नी ग़ीबत करने वाले) और लोगों की आबरू रेज़ी करने वाले थे।"

(ابوداؤد ج٤ ص٣٥٣ حدیث ٤٨٧٨)

ज़िन्दगी मुख़्तसर है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यक़ीनन ज़िन्दगी बेहद मुख़्तसर है। अ़न्क़रीब हमारी सांस की माला टूट जाएगी और हमारे नाज़ उठाने वाले हमें अपने कन्धों पर लाद कर वीरान क़ब्रिस्तान की त़रफ़ चल पड़ेंगे। आह ! हमारी सारी आरज़ूएं ख़ाक में मिल जाएंगी, हमारी ख़ून पसीने की कमाई हमारे साथ आएगी न हमें काम आएगी।

बे वफ़ा दुन्या पे मत कर ए'तिबार तू अचानक मौत का होगा शिकार
मौत आ कर ही रहेगी याद रख ! जान जा कर ही रहेगी याद रख !
गर जहां में सो बरस तू जी भी ले
क़ब्र में तन्हा क़ियामत तक रहे

(वसाइले बख़्शिश, स. 711)

आह ! मुस्तक़्बिल का डॉक्टर !

मेडीकल कॉलेज के फ़ाइनल इयर का एक ज़हीन तरीन त़ालिबे इ़ल्म अपने दोस्त के हमराह पिकनिक मनाने चला। पिकनिक पोइन्ट पर पहुंच कर उस का दोस्त नदी में तैरने के लिये उतरा मगर डूबने लगा, मुस्तक़्बिल के डॉक्टर ने उस को बचाने की ग़रज़ से जज़्बात में आ कर पानी में छलांग लगा दी, अब वोह तैरना तो जानता नहीं था लिहाज़ा ख़ुद भी फंस गया। क़िस्मत की बात कि उस का दोस्त तो जूं तूं कर के निकलने में काम्याब हो गया मगर आह ! मुस्तक़्बिल का डॉक्टर बेचारा

डूब कर मौत के घाट उतर गया। कोहराम मच गया, मां बाप के बुढ़ापे का सहारा पानी की मौजों की नज़्र हो गया, मां बाप के सुहाने सपने शरमिन्दए ता'बीर न हो सके और वोह बेचारा ज़हीन त़ालिबे इल्म M.B.B.S के फ़ाइनल इम्तिह़ान का रिज़ल्ट हाथ में आने से क़ब्ल ही **क़ब्र के इम्तिह़ान** में मुब्तला हो गया।

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मकानात की ह़िकायत

ह़ज़रते सय्यिदुना सालेह़ मरक़दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللہِ الْقَوِی का गुज़र कुछ आ़लीशान **मकानात** की त़रफ़ हुवा तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : ''ऐ बुलन्दो बाला इमारतो ! वोह लोग कहां हैं जिन्हों ने तुम्हें ता'मीर किया ! और वोह लोग किधर गए जिन्हों ने सब से पहले तुम को आबाद किया ! वोह लोग किधर जा छुपे जो सब से पहले तुम्हारे अन्दर रिहाइश पज़ीर थे ?'' वोह मकान भला क्या जवाब देते ! ग़ैब से एक आवाज़ गूंज उठी : ''जो लोग पहले इन मकानात में रहते थे उन के नामो निशान मिट गए अब उन का नाम तक लेने वाला कोई बाक़ी नहीं रहा, उन के बदन ख़ाक में मिल गए और उन के आ'माल उन के गले का हार हैं।''

(اَلْمُنَبِّہات عَلَی الْاِسْتِعْداد ص۱۹)

ऊंचे ऊंचे मकान थे जिन के तंग क़ब्रों में आज आन पड़े
आज वोह हैं न हैं मकां बाक़ी नाम को भी नहीं है निशां बाक़ी

हमारी फ़ुज़ूल सोच

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों की भी क्या ख़ूब मदनी सोच होती है उन्हों ने आ़लीशान मकानात देख कर उन से इ़ब्रत का सामान किया और एक हम हैं कि अगर उ़म्दा मकानात, कोठियां और बंगले देख लेते हैं तो मज़ीद ग़फ़्लत का शिकार हो जाते हैं, उन कोठियों को रश्क की नज़र से देखते हैं, उन की सजावटों का नज़्ज़ारा करते हैं, उस की पाएदारी पर तब्सिरे करते हैं, उन के भाव का अन्दाज़ा लगाते हैं और न जाने कितनी फ़ुज़ूलियात में मुब्तला हो जाते हैं । ऐ काश ! हमें भी मदनी सोच नसीब हो जाती ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! जिस दारे ना पाएदार के हुसूल की ख़ातिर आज हम ज़लीलो ख़्वार हो रहे हैं इस को न सबात है न क़रार, इस की ज़ाहिरी रंगीनी व शादाबी पर फ़रेफ़्ता होने वालो ! **याद रखो !**

गर्चे ज़ाहिर में मिस्ले गुल है पर ह़क़ीक़त में ख़ार है दुन्या
एक झोंके में है इधर से उधर चार दिन की बहार है दुन्या

दो ख़ौफ़नाक चीज़ें

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिन चीज़ों से मैं अपनी उम्मत पर ख़ौफ़ करता हूं उन में ज़ियादा ख़ौफ़नाक नफ़्सानी ख़्वाहिश और लम्बी उम्मीद है। नफ़्सानी ख़्वाहिश ह़क़ से रोक देती है और लम्बी उम्मीद आख़िरत को भुला देती है। येह दुन्या कूच कर के जा रही है और आख़िरत कूच कर के आ रही है। इन दोनों (दुन्या और आख़िरत) में से हर एक की औलाद (या'नी त़लब गार) है। अगर तुम येह कर सको कि दुन्या के बच्चे (या'नी त़लब गार) न बनो तो ऐसा ही करो क्यूं

कि आज तुम अ़मल की जगह में हो जहां हि़साब नहीं और कल तुम आख़िरत के घर में होगे जहां अ़मल न होगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج۷ص۳۷۰حدیث ۱۰۶۱۶)

उ़म्दा मकान वालों का अन्जाम

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई ख़्वाहिशाते नफ़्स और लम्बी उम्मीदों की तबाह कारियां आज बिल्कुल वाज़ेह़ हैं। अब्नाए दुन्या (दुन्या के बेटों) की कसरत जा बजा है कि जिसे देखो दुन्या से मह़ब्बत का तो दम भरता नज़र आ रहा है, आख़िरत की मह़ब्बत रखने वालों की ता'दाद निहायत कम है, हर एक दुन्या का मुस्तक़्बिल रोशन करने की तगो दौ में मश्ग़ूल है, और इसी फ़िक्र में है कि जितनी बन पड़े उतनी दौलत इकठ्ठी कर ली जाए, जितना हो सके अस्नाद ह़ासिल कर ली जाएं, जितना हो सके दुन्या के प्लॉट ह़ासिल हो जाएं। ऐ दुन्या में उ़म्दा उ़म्दा मकानात पाने के त़लब गारो ! ज़रा दिल के कानों से सुनो, क़ुरआने पाक क्या कह रहा है ! चुनान्चे **सूरतुद्दुख़ान** पारह 25 आयत 25 ता 29 में इर्शाद होता है :

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّ عُيُوْنٍۙ(۲۵) وَّ زُرُوْعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيْمٍۙ(۲۶) وَّ نَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَۙ(۲۷) كَذٰلِكَ ۫ وَ اَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ(۲۸) فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَ الْاَرْضُ وَ مَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ(۲۹)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : कितने छोड़ गए बाग़ और चश्मे और खेत और उ़म्दा मकानात और ने'मतें जिन में फ़ारिग़ुल बाल थे। हम ने यूंही किया और उन का वारिस दूसरी क़ौम को कर दिया तो उन पर आस्मान और ज़मीन न रोए और उन्हें मोहलत न दी गई।

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने ग़ौर फ़रमाया ! उ़म्दा उ़म्दा मकानात बनाने वाले, ख़ुशनुमा बाग़ात लगाने वाले और लहलहाते खेत उगाने वाले यकबारगी दुन्या से रुख़्सत हो गए और उन के छोड़े हुए असासे का दूसरों को वारिस बना दिया गया, न उन पर ज़मीन रोई न आस्मान, न ही उन्हें मोहलत दी गई, उन के नामो निशान मिटा दिये गए, उन के तज़्किरे ख़त्म हो गए, बस अब वोह हैं और उन के आ'माल, तो येह दुन्या बस इ़ब्रत ही इ़ब्रत है।

जहां में हैं इ़ब्रत के हर सू नुमूने मगर तुझ को अन्धा किया रंगो बू ने
कभी ग़ौर से भी येह देखा है तू ने जो आबाद थे वोह मकां अब हैं सूने
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

मिले ख़ाक में अहले शां कैसे कैसे मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे
हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे ज़मीं खा गई नौ जवां कैसे कैसे
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

अजल ने न किसरा ही छोड़ा न दारा इसी से सिकन्दर सा फ़ातेह़ भी हारा
हर इक ले के क्या क्या न ह़सरत सिधारा पड़ा रह गया सब यूंही ठाठ सारा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

येही तुझ को धुन है रहूं सब से बाला हो ज़ीनत निराली हो फ़ेशन निराला
जिया करता है क्या यूंही मरने वाला तुझे ह़ुस्ने ज़ाहिर ने धोके में डाला
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इ़ब्रत की जा है तमाशा नहीं है

वोह है ऐ़शो इ़श्रत का कोई महल भी जहां ताक में हर घड़ी हो अजल भी
बस अब अपने इस जह़ल से तू निकल भी येह जीने का अन्दाज़ अपना बदल भी

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

न दिल्दादए शे'र गोई रहेगा न गिरवीदए शोहरा जोई रहेगा
न कोई रहा है न कोई रहेगा रहेगा तो ज़िक्रे निकोई रहेगा
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

जब इस बज़्म से उठ गए दोस्त अक्सर और उठते चले जा रहे हैं बराबर
येह हर वक़्त पेशे नज़र जब है मन्ज़र यहां पर तेरा दिल बहलता है क्यूंकर
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

जहां में कहीं शोरे मातम बपा है कहीं फ़क्रो फ़ाक़े से आहो बुका है
कहीं शिक्वए जोरो मक्रो दग़ा है ग़रज़ हर त़रफ़ से येही बस सदा है
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

तुझे पहले बचपन ने बरसों खिलाया जवानी ने फिर तुझ को मजनूं बनाया
बुढ़ापे ने फिर आ के क्या क्या सताया अजल तेरा कर देगी बिल्कुल सफ़ाया
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

बुढ़ापे से पा कर पयामे क़ज़ा भी न चौंका, न चैता, न संभला ज़रा भी
कोई तेरी ग़फ़्लत की है इन्तिहा भी जुनूं कब तलक ? होश में अपने आ भी
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

येह फ़ानी जहां है मुसल्मान तुझ को करेगी येह दुन्या परेशान तुझ को
फंसा देगी मरक़द में नादान तुझ को करेगी क़ियामत में हैरान तुझ को
जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है
येह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह शोर मच जाए कि उस का इन्तिक़ाल हो गया है ! अब जल्दी ग़स्साल को बुला लाओ चुनान्चे ग़स्साल तख़्ता उठाए चला आ रहा हो, ग़ुस्ल दिया जा रहा हो..... कफ़न पहनाया जा रहा हो..... फिर अंधेरी क़ब्र में उतार दिया जाए, इस से क़ब्ल ही मान जाइये ! जल्दी जल्दी तौबा कर लीजिये !

कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी
क़ब्र में वरना सज़ा होगी कड़ी

(वसाइले बख़्शिश, स. 712)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी **सुन्नत** से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह **जन्नत** में मेरे साथ होगा। (اِبنِ عَساکِر ج۹ ص۳۴۳)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

''ग़दा भी मुन्तज़िर है ख़ुल्द में नेक्कों की दा'वत का''

के बत्तीस ह़ुरूफ़ की निस्बत से खाने के 32 मदनी फूल

۞ **खाने** से मक़्सूद ह़ुसूले लज़्ज़त न हो बल्कि खाते वक़्त येह **निय्यत** कर लीजिये : ''मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इबादत पर क़ुव्वत ह़ासिल करने के

लिये खा रहा हूं'' ۞ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ 312 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** हिस्सा 16 सफ़हा 17 पर है : भूक से कम खाना चाहिये और पूरी भूक भर कर खाना खा लेना मुबाह़ है या'नी न सवाब है न गुनाह, क्यूं कि इस का भी सह़ीह़ मक़्सद हो सकता है कि त़ाक़त ज़ियादा होगी । और **भूक से ज़ियादा खा लेना ह़राम है ।** ज़ियादा का येह मत़लब है कि इतना खा लेना जिस से पेट ख़राब होने का गुमान है, मसलन दस्त आएंगे और त़बीअ़त बद मज़ा हो जाएगी । **(دُرِّمُختار ج۹ ص۵۶۰)** ۞ भूक से कम खाना बे शुमार फ़वाइद का मज्मूआ है कि तक़रीबन 80 फ़ीसद बीमारियां डट कर या'नी ख़ूब पेट भर कर खाने से होती हैं । लिहाज़ा अभी भूक बाक़ी हो तो हाथ रोक लीजिये ۞ अक्सर दस्तर ख़्वान पर इ़बारत लिखी होती है (मसलन शे'र या कम्पनी वग़ैरा का नाम) ऐसे दस्तर ख़्वानों को इस्ति'माल में लाना, उन पर खाना खाना न चाहिये । (बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 63) ۞ **खाना** खाने से पहले और बा'द दोनों हाथ पहुंचों तक धोना **सुन्नत** है **(عالمگیری ج۵ ص۳۳۷)** ۞ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : ''खाने से पहले और बा'द में वुज़ू करना (या'नी पहुंचों तक दोनों हाथ धोना) **रिज़्क़ में कुशादगी** करता और शैत़ान को दूर करता है ।'' **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخطاب ج۲ ص۳۳۳ حديث ۳۰۰۱)** ۞ खाना तनावुल करने के मौक़अ़ पर जूते उतार लीजिये कि इस से क़दम आराम पाते हैं । **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : ''जब तुम खाना खाने लगो तो अपने जूते उतार दो ! क्यूं कि येह तुम्हारे क़दमों के लिये राह़त का बाइ़स है ।'' **(مُعجَم اَوسط ج ۲ ص ۲۵۶ حديث ۳۲۰۲)** ۞ **खाते** वक़्त उल्टा पाउं बिछा दीजिये

और सीधा घुटना खड़ा रखिये या सुरीन पर बैठ जाइये और दोनों घुटने खड़े रखिये। (मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, हिस्सा : 16, स. 21) या दोनों क़दमों की पुश्त पर दो ज़ानू बैठिये। (احیاء العلوم ج۲ص۵) ۞ **इस्लामी** भाई हो या इस्लामी बहन सभी के लिये येह मदनी फूल है कि जब खाने बैठें तो चादर या कुरते के दामन के ज़रीए **पर्दे में पर्दा** ज़रूर करें ۞ **सालन** या चटनी की पियाली रोटी पर मत रखिये। (رَدُّالْمُحتار ج۹ص۵۶۲) ۞ नंगे सर खाना अदब के ख़िलाफ़ है ۞ बाएं या'नी उल्टे हाथ को ज़मीन पर टेक दे कर खाना मक्रूह है ۞ **मिट्टी** के बरतन में खाना अफ़्ज़ल है कि जो अपने घर में **मिट्टी के बरतन** बनवाता है फ़िरिश्ते उस घर की **ज़ियारत** करने आते हैं। (ایضاًص۵۶۶) ۞ दस्तर ख़्वान पर सब्ज़ी हो तो फ़िरिश्ते नाज़िल होते हैं। (احیاءُ العلوم ج۲ص۲۲) ۞ शुरूअ़ करने से क़ब्ल येह दुआ पढ़ ली जाए, अगर खाने या पीने में **ज़हर** भी होगा तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ असर नहीं करेगा। दुआ येह है : بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَایَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ یَا حَیُّ یَا قَیُّوْمُ[1] **तरजमा : अल्लाह तआ़ला** के नाम से शुरूअ़ करता हूं जिस के नाम की बरकत से ज़मीन व आस्मान की कोई चीज़ नुक़्सान नहीं पहुंचा सकती, ऐ हमेशा ज़िन्दा व क़ाइम रहने वाले। (اَلفِردَوس ج۱ص۲۸۲ حدیث۱۱۰۶) ۞ **अगर** शुरूअ़ में بِسْمِ اللّٰه पढ़ना भूल गए तो दौराने तआ़म याद आने पर इस तरह कह लीजिये :

मदीना

1 : जिस दुआ में : ''یَاحَیُّ یَاقَیُّوْمُ'' के बजाए ''وَھُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْم'' है, उस दुआ की फ़ज़ीलत ''तिरमिज़ी'' और ''इब्ने माजह'' में इस तरह है, **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो बन्दा रोज़ाना सुब्ह व शाम 3 मर्तबा येह कलिमात कहे : ''بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَایَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَیْءٌ فِی الْاَرْضِ وَلَا فِی السَّمَآءِ وَھُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْم'' तो उसे कोई चीज़ नुक़्सान नहीं दे सकती। (ترمذی ج۵ص۲۵۰ حدیث۳۳۹۹،ابن ماجه ج۴ص۲۸۴ حدیث۳۸۶۹)

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ **तरजमा : "अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से खाने की इब्तिदा और इन्तिहा" **अव्वल** आख़िर नमक या नमकीन खाइये कि इस से **70 बीमारियां** दूर होती हैं। (رَدُّالْمُحتَار ج٩ ص٥٦٢) ۞ **सीधे** हाथ से खाइये, उल्टे हाथ से खाना, पीना, लेना, देना, **शैतान** का त़रीक़ा है। अक्सर इस्लामी भाई निवाला तो सीधे हाथ से ही खाते हैं, मगर जब मुंह के नीचे उल्टा हाथ रखते हैं तो बा'ज़ दाने उस में गिरते हैं और वोह उल्टे ही हाथ से फांक लेते हैं, इसी त़रह़ दस्तर ख़्वान पर गिरे हुए दाने उल्टे ही हाथ से खाते हैं, उन को चाहिये कि वोह उल्टे हाथ वाले दाने सीधे हाथ में डाल कर ही मुंह में डालें ۞ बाएं (या'नी उल्टे) हाथ में रोटी ले कर दहने (या'नी सीधे) हाथ से निवाला तोड़ना **दफ़्ए तकब्बुर** के लिये है। (फ़तावा रज़विय्या, जि. 21, स. 669) हाथ बढ़ा कर थाल या सालन के बरतन के ऐन बीच में ऊपर कर के रोटी और डबल रोटी वग़ैरा तोड़ने की आ़दत बनाइये, इस त़रह़ रोटी के ज़र्रात या रोटी पर तिल हुए तो बरतन ही में गिरेंगे वरना दस्तर ख़्वान पर गिर कर **ज़ाएअ़** हो सकते हैं। (तिल शायद ज़ीनत के लिये डालते हैं, बिग़ैर तिल की रोटी लेना ही मुनासिब ताकि तिल गिर कर ज़ाएअ़ होने का बखेड़ा ही न रहे) ۞ **तीन** उंग्लियों या'नी बीच वाली, शहादत की और अंगूठे से खाना खाइये कि येह **सुन्नते अम्बिया** عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام है। अगर चावल के दाने जुदा जुदा हों और तीन उंग्लियों से निवाला बनना मुम्किन न हो तो चार या पांच उंग्लियों से खा लीजिये ۞ **लुक़्मा** छोटा लीजिये और चपड़ चपड़ की आवाज़ पैदा न हो इस एह़तियात़ के साथ इस क़दर चबाइये कि मुंह की ग़िज़ा पतली हो जाए, यूं करने से हाज़िम लुआ़ब भी अच्छी त़रह़ शामिल हो जाएगा। अगर

अच्छी त़रह़ चबाए बिग़ैर निगल जाएंगे तो हज़्म करने के लिये मे'दे को सख़्त ज़ह़मत करनी पड़ेगी और नतीजतन त़रह़ त़रह़ की बीमारियों का सामना हो सकता है लिहाज़ा **दांतों** का काम **आंतों** से मत लीजिये ۞ हर दो एक लुक़्मे के बा'द "**یَا وَاجِدُ**" पढ़ने से पेट में नूर पैदा होता है ۞ **फ़राग़त** के बा'द पहले बीच की फिर शहादत की उंगली और आख़िर में अंगूठा तीन तीन बार चाटिये। ۞ **सरकारे मदीना** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم खाने के बा'द मुबारक उंग्लियों को **तीन मर्तबा** चाटते[1] ۞ **बरतन** भी चाट लीजिये। ह़दीसे पाक में है : खाने के बा'द जो शख़्स **बरतन** चाटता है तो वोह बरतन उस के लिये दुआ़ करता है और कहता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुझे जहन्नम की आग से आज़ाद करे जिस त़रह़ तू ने मुझे **शैत़ान** से आज़ाद किया।[2] और एक रिवायत में है कि बरतन उस के लिये **इस्तिग़फ़ार** (या'नी मग़्फ़िरत की दुआ़) करता है[3] ۞ **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْوَالِی फ़रमाते हैं : जो (खाने के बा'द) पियाले (या रिकाबी) को चाटे और धो कर पी ले उसे एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है। और गिरे हुए टुकड़े उठा कर खाना जन्नत की हूरों का महर है[4] ۞ **फ़रमाने मुस्तफ़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : जो शख़्स खाने के गिरे हुए टुकड़ों को उठा कर खाए वोह फ़राख़ी (या'नी कुशादगी) के साथ ज़िन्दगी गुज़ारता है और उस की औलाद में ख़ैरियत रहती है[5] ۞ खाने के बा'द दांतों

مدینہ

۱: الشمائل المحمدیۃ، للترمذی ص ۹۶ حدیث ۱۳۳ ۲: جَمْعُ الْجَوامِع لِلسُّیُوطی ج ۱ ص ۳۴۷ حدیث ۲۵۵۸ ۳: ابنِ ماجہ ج ۴ ص ۱۴ حدیث ۳۲۷۱ ۴: اِحیاء العلوم ج ۲ ص ۸ ۵: ایضاً۔

का ख़िलाल कीजिये ۞ **खाने** के बा'द अव्वल आख़िर दुरूद शरीफ़ के साथ येह **दुआ** पढ़िये : اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ ۔ **तरजमा :** ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र है जिस ने हमें खिलाया, पिलाया और हमें मुसल्मान बनाया'' ۞ **अगर** किसी ने खिलाया हो तो येह **दुआ** भी पढ़िये : اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ **तरजमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस को खिला जिस ने मुझे खिलाया और उस को पिला जिस ने मुझे पिलाया । (الحصن الحصین ص ۷۱) ۞ खाना खाने के बा'द **सूरतुल इख़्लास** और **सूरए कुरैश** पढ़िये । (اِحیاء العلوم ج ۲ ص ۸) ۞ **खाने** के बा'द हाथ साबुन से अच्छी त़रह़ धो कर पोंछ लीजिये ۞ **ह़ुज्जतुल इस्लाम** ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِی लिखते हैं : खाने के बा'द वुज़ू (या'नी पहुंचों तक दोनों हाथ धोना) जुनून (या'नी पागल पन) को दूर रखता है । (ایضاً ج ۲ ص ٤)

हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक्तबतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब ''**बहारे शरीअ़त**'' ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब ''**सुन्नतें और आदाब**'' हदिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **मदनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात अज्र लिखता है और क़ीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
हिसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

8 रबीउ़ल अव्वल 1436 सि.हि.

31-12-2014

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक्तबतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने महल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

مآخذ ومراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرآن مجید		الشمائل المحمدیۃ	داراحیاءالتراث العربی بیروت
تفسیر صاوی	دارالفکر بیروت	ابن عساکر	دارالفکر بیروت
درمنثور	دارالفکر بیروت	الحصن الحصین	المکتبۃ العصریہ بیروت
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ	احیاءالعلوم	دارصادر بیروت
ابوداؤد	داراحیاءالتراث العربی بیروت	القول البدیع	مؤسسۃ الریان بیروت
ترمذی	دارالفکر بیروت	المنہجات	
ابن ماجہ	دارالمعرفۃ بیروت	درّمختار	دارالمعرفۃ بیروت
مسند امام احمد	دارالفکر بیروت	ردّالمحتار	دارالمعرفۃ بیروت
معجم اوسط	دارالکتب العلمیۃ بیروت	عالمگیری	دارالفکر بیروت
شعب الایمان	دارالکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضافاؤنڈیشن
مساوی الاخلاق	مؤسسۃ الکتب الثقافیۃ بیروت	بہارشریعت	مکتبۃ المدینہ
الفردوس بمأثور الخطاب	دارالکتب العلمیۃ بیروت	وسائل بخشش	مکتبۃ المدینہ
جمع الجوامع	دارالکتب العلمیۃ بیروت	☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
सरकार ने दुरूद ख़्वां का रुख़्सार चूमा	1	ज़िन्दगी मुख़्तसर है	10
बयान सुनने के आदाब	2	आह ! मुस्तक़्बिल का डॉक्टर !	10
यतीमों की दीवार	3	मकानात की हिकायत	11
ख़ज़ानए ला जवाब	4	हमारी फ़ुज़ूल सोच	12
सात इ़ब्रत नाक इ़बारात	5	दो ख़ौफ़नाक चीज़ें	12
मौत का यक़ीन और हंसना	6	उ़म्दा मकान वालों का अन्जाम	13
जहन्नम की होलनाकियां	7	जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है	14
जहन्नम की ख़त़रनाक ग़िज़ाएं	8	कर ले तौबा रब की रह़मत है बड़ी	16
झूटे के जबड़े चीरे जा रहे थे	9	खाने के 32 मदनी फूल	16
चेहरे और सीने नोच रहे थे	9	मआख़िज़ो मराजेअ़	32

येह रिसाला पढ़ लेने के बा'द सवाब की निय्यत से किसी को दे दीजिये

रिज़्क़ में ब-र-कत का बे मिसाल वज़ीफ़ा

एक सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुन्या ने मुझ से पीठ फेर ली। फ़रमाया : क्या वोह तस्बीह़ तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह़ है फ़िरिश्तों और मख़्लूक़ की जिस की ब-र-कत से रोज़ी दी जाती है, जब सुब्हे सादिक़ तुलूअ़ हो तो येह तस्बीह़ एक सो बार पढ़ा करो,

"سُبْحٰنَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ، سُبْحٰنَ اللّٰہِ الْعَظِیْمِ، اَسْتَغْفِرُ اللّٰہ"

दुन्या तेरे पास ज़लील हो कर आएगी। वोह शख़्स चला गया कुछ मुद्दत ठहर कर दोबारा ह़ाज़िर हुवा, अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुन्या मेरे पास इस **कसरत** से आई, मैं ह़ैरान हूं, कहां उठाऊं कहां रखूं !

(الخصائصُ الکُبریٰ لِلسُّیُوطی ج۲ ص۲۹۹ مُلَخَّصاً)

आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : इस तस्बीह़ का विर्द ह़त्तल इम्कान तुलूए़ सुब्हे सादिक़ के साथ हो, वरना सुब्ह से पहले, जमाअ़त क़ाइम हो जाए तो उस में शरीक हो कर बा'द को अ़दद पूरा कीजिये और जिस दिन क़ब्ल नमाज़ भी न हो सके तो ख़ैर तुलूए़ शम्स (या'नी सूरज निकलने) से पहले। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 128 मुलख़्ख़सन)